

बॉक्साइट खनन - नियमगिरि से आगे

भारत डोगरा

देश ही नहीं दुनिया भर के अनेक पर्यावरणविदों ने उड़ीसा के नियमगिरि से भारी मात्रा में बॉक्साइट का खनन करने की वेदांत की परियोजना पर रोक लगाने के केंद्र सरकार के निर्णय की प्रशंसा की है। यह रोक काफी हद तक इस आधार



पर लगाई गई कि पर्यावरण, वन व अन्य नियम-कानूनों का उल्लंघन हुआ था। ऐसे उल्लंघन के विरुद्ध कार्यवाही करना जहां पूरी तरह न्यायोचित है, वहां यह कहना भी ज़रूरी है कि यह मामला केवल कुछ नियम-कानूनों के उल्लंघन तक सीमित नहीं है। बॉक्साइट खनन की जिन परियोजनाओं में कानूनों और नियमों का काफी हद तक पालन किया गया है (या कोई गंभीर उल्लंघन चर्चित नहीं हुआ है) वहां भी बड़े पैमाने के बॉक्साइट खनन के औचित्य के बारे में कई महत्वपूर्ण सवाल उठते हैं।

बॉक्साइट खनन की एक विशेषता यह है कि इसकी लगभग सब परियोजनाएं बहुत बड़े पैमाने के खनन की ही बनती है। बॉक्साइट का सीधा उपयोग नहीं होता है, इससे पहले बहुत जटिल व कठिन प्रक्रिया से एल्यूमिनियम बनाया जाता है, तभी इसका उपयोग होता है। यह प्रौद्योगिक प्रक्रिया व एल्यूमिनियम का उत्पादन कुछ विशालकाय कंपनियों में केंद्रित है और उनका पूरा अर्थशास्त्र व तकनीक बहुत बड़े पैमाने के उत्पादन पर। अतः बॉक्साइट के खनन की जो भी परियोजना ये कंपनियां चाहती हैं वे प्रायः कम समय में बहुत अधिक खनिज निकालने पर आधारित होती हैं।

बॉक्साइट की दूसरी महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि इसकी उपस्थिति वाली व उसके आसपास की ज़मीन बहुत उपजाऊ होती है। इस कारण यहां बहुत तरह के पेड़-पौधे

पनपते हैं, बहुत जैव विविधता वाले वन यहां पाए जाते हैं। बॉक्साइट में वर्षा के पानी के संरक्षण की बहुत क्षमता है। जिससे इसके आसपास की भूमि में सूखे के दौर में भी जैव विविधता बनी रहती है। इस तरह

बॉक्साइट के पर्वतीय भंडारों में वर्षा का जल संरक्षित होता है जो बाद के सूखे महीनों में धीरे-धीरे नीचे पहुंचता रहता है। यह जल उपजाऊ मिट्टी, खनिज, वनस्पति से रिसकर पहुंचता है अतः इसकी गुणवत्ता बहुत अच्छी मानी जाती है। दूर-दूर तक इस तरह पानी के साथ पोषक तत्व पहुंचते हैं और खेती, पेड़-पौधे, वनस्पति से भूमि हरी-भरी रखने में सहायक होते हैं।

तीसरी ध्यान देने योग्य बात यह है कि बड़े पैमाने पर बॉक्साइट के खनन से लेकर एल्यूमिनियम बनाने की पूरी प्रक्रिया पर्यावरण विनाश से जुड़ी है। वनों व हरियाली के विनाश के अतिरिक्त बेहद खतरनाक प्रदूषकों का उत्पादन व इनसे जुड़े स्वास्थ्य के गंभीर खतरे इस पूरी प्रक्रिया की एक बड़ी समस्या हैं। यह एक ऐसी पूंजी-सघन प्रक्रिया है जिसमें प्रायः प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष विस्थापन काफी होता है व रोज़गार बहुत कम मिलता है।

बॉक्साइट से एल्यूमिनियम प्राप्त करने की प्रक्रिया ऊर्जा का अत्यधिक दोहन करती है। प्रायः यह देखा गया है कि जहां एल्यूमिनियम उत्पादन होता है वहां नदियों पर बिजली उत्पादन के लिए बड़े-बड़े बांध भी बनाए जाते हैं। इस तरह विस्थापन व पर्यावरण क्षति का एक सिलसिला आरंभ होता है। जहां पहले से बिजली की कमी हो, वहां एल्यूमिनियम उत्पादन को प्राथमिकता मिलने में आम बिजली उपभोक्ताओं

के लिए बिजली का संकट बढ़ता है।

बॉक्साइट खनन से लेकर एल्यूमिनियम उत्पादन तक की पूरी प्रक्रिया के बेहद विनाशकारी सामाजिक व पर्यावरणीय प्रतिकूल असर के कारण प्रायः यह खनन व उद्योग विवादों से घिरा रहा है। पर एल्यूमिनियम की सस्ती उपलब्धि से कुछ अति महत्वपूर्ण उद्योगों के हित जुड़े हैं। जैसे, हथियार उद्योग व हवाई जहाज़ उद्योग आदि। इन उद्योगों के अत्यधिक असर के कारण ऐसे दबाव बनते हैं कि बॉक्साइट खनन व एल्यूमिनियम उत्पादन के लिए पर्यावरण विनाश को सहन किया जाए व स्थानीय लोगों के हितों के स्थान

पर खनन व औद्योगिक हितों को महत्त्व दिया जाए। ऐसा करने पर ही एल्यूमिनियम अपेक्षाकृत सस्ती कीमत पर उपलब्ध हो पाता है।

ऐसी प्रवृत्तियां विश्व के अधिकांश बॉक्साइट बहुल क्षेत्रों में देखी गई हैं। पर भारत सरकार ने नियमगिरी बॉक्साइट खनन को रोककर एक नई राह दिखाई है व पर्यावरणविदों, आदिवासी हितों से जुड़े लोगों में एक नई उम्मीद जगाई है। उम्मीद है कि बॉक्साइट के खनन पर व्यापक नीति में भी ऐसा ही व्यापक जन हितकारी, पर्यावरण रक्षक नज़रिया अपनाया जाएगा। *(स्रोत फीचर्स)*